पद २०६

(राग: भूप जिल्हा - ताल: त्रिताल)

धिरसी कां रे हरी पदरा या। अशी रीत तुझी हे कशी परक्या स्त्रियेसी धराया।।ध्रु.।। मी व्रजललना तशी नोहे रे। मज संगे तूं अशी झोंबाझोंबी कराया।।१।। नेईन तुजला धरुनियां कृष्णा। लावीन शिक्षा सांगुनी नंदराया।।२।। म्हणे सोड ती गवळण। काकुळतीस्तव येतसे चरण धराया।।३।।